Available online at http://www.nrjp.co.in

Journal of Management Science, Operations & Strategies, (E- ISSN 2456-9305) Vol. 4, Issue, 01. 39-47p, April 2020

National Research & Journal Publication

Review Article

fir'lRrkRed lekt] cnyko dh rjQ gekjh ;ok ih<h %
,d lekykpukRed v/;;u

vitfy xIrk
'kks/k Nk=k Lkekt 'kkL= foHkkx
Yk[kuÅ fo'ofo|ky;]y[kuÅ

Abstract

पितृसत्ता एक ऐसी विचारधारा है जो पारंपरिक मान्यताओ का अनुकरण तार्किकता व वैज्ञानिकता के स्थान पर केवल आस्था और प्रागनुभवो के आधार पर करती है। यह सामाजिक,राजनीतिक और नैतिक मान्यताओ का समग्र है जो पुरानी मान्यताओ पर जोर देते हुए नवीन विचारधारा को आजमाऐ बिना पुरानी व्यवस्था को बनाये रखने पर जोर देती हैं।डेविड हयूम और एडमण्ड बर्क रूढिवाद के प्रमुख उन्नायक माने जाते है। समकालीन विचारको में माइकेल ओकशॉट को रूढिवाद का प्रमुख सिद्वान्तकार माना जाता है। वर्तमान समय में सामाजिक रूढियो व पितृसत्ता के सन्दर्भ में हमारे युवाओ के विचारो पर यह अध्ययन आधारित हैं। प्रस्तुत विषय पर युवा लोगो के साथ गोरखपुर के कॉलेज और विश्वविद्यालय में अध्ययन किया गया है। कॉलेजो के सत्रो में मुख्य रुप से शिक्षको से थोडा समय लेकर युवाओ से लिंग,यौन ,हिसा और कानून के सन्दर्भ में बुनियादी बातचीत शुरु किया गया।इसके अलावा लिंग, यौन पर अन्तरपीढीगत संवाद करने के लिए छात्रो को अनुसूची साक्षात्कार की सुविधा प्रदान की गई थी।

Copyright©2020*अंजलि गुप्ता* *This is an open access article for the issue release and distributed under the NRJP Journals License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*

mnn';&

ikFkfed mnn'; bl eY;kdu dk le>uk Fkk%

1) पितृसत्ता का लिंग पर क्या प्रभाव पडा है, विभिन्न प्रकार के लिंग आधारित हिंसा ,कार्यस्थल पर यौन उत्पीडन ,पितृसत्ता , जीवन साथी चुनने का अधिकार ,शादी की उम्र और विविधताएं।

2) पितृसत्तानौजवानो के जीवन को कैसे प्रभावित करती है।

Ik}fr&

मूल्यांकन के प्रयोजनो के लिए 6 कालेजों को चुना गया(5 शहरी और 1 ग्रामीण,4 कॉलेज में सभी लडकियां थी और 2 सह–शिक्षा के थे)।कुल 350 युवा लोंगो के साथ बात की गई,जिनकी उम्र 16 से 22 वर्ष के बीच थी और लगभग 75 प्रतिशत युवा महिलाऐ थी, मूल्याकंन में भाग लेने वाले ज्यादातर निम्न मध्यम वर्ग /श्रमिक वर्ग ,दलित और मुस्लिम समुदाय से थे, कॉलेज में छात्रों को दो सर्वेक्षण फॉर्म भरने के लिए कहा गया । पहले सर्वेक्षण के फार्म में ज्यादातर सामान्य/सच्चे प्रारूप के साथ मात्रात्मक प्रश्न थे ,जो कुछ और गुणात्मक प्रश्नो के साथ लिंग आधरित हिंसा ,लिंग रूढिवादिता के आस पास समझ को प्रस्तुत करने के लिए था।

[kkt@iHkko&

Qk¦e&v

fy¦x :f<okn% फॉर्म का पहला खंड रूढिवाद की एक सरल सूची थी,जिसमें प्रतिभागियों को लिखना था कि वे इसके साथ सहमत थे या असहमत थे। यह देखकर बहुत खुशी हुई कि अधिकांश प्रतिभागियों ने पितृसत्तात्मक रूढियों में भाग नहीं लिया ।उदाहरण के लिए ,80 प्रतिशत प्रतिभागियों ने महसूस किया कि मासिक धर्म रक्त गंदा नही है। 90 प्रतिशत इस कथन से असहमत थे कि एक लडकी को परिपक्व समझा जाने के साथ विवाह करना चाहिए।84 प्रतिशत ने महसूस किया कि एक मॉ एकमात्र ऐसी नही है जो कि बच्चे की देखभाल कर सके ,जबकि 92प्रतिशत ने महसूस किया कि ट्रांसजेंडर होना कोई मानसिक बिमारी नही है।90 प्रतिशत प्रतिभागियो ने महसूस किया कि पति के लिए पत्नी से अधिक शिक्षित होना आवश्यक नही है और 88 प्रतिशत ने महसूस किया कि वंश को केवल पुरूष के माध्यम से जारी रखने की आवश्यकता नही हैं। फॉर्म के इस खण्ड से उभरती हुई प्रवृति स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि यह अध्ययन समाज में लिंग और यौन की धारणाओ को, कम से कम, विचारों के स्तर पर ,चुनौति देने में प्रभावी रहा है।

;|okvk d| fopkjk| ij vk/kkfjr pkV%

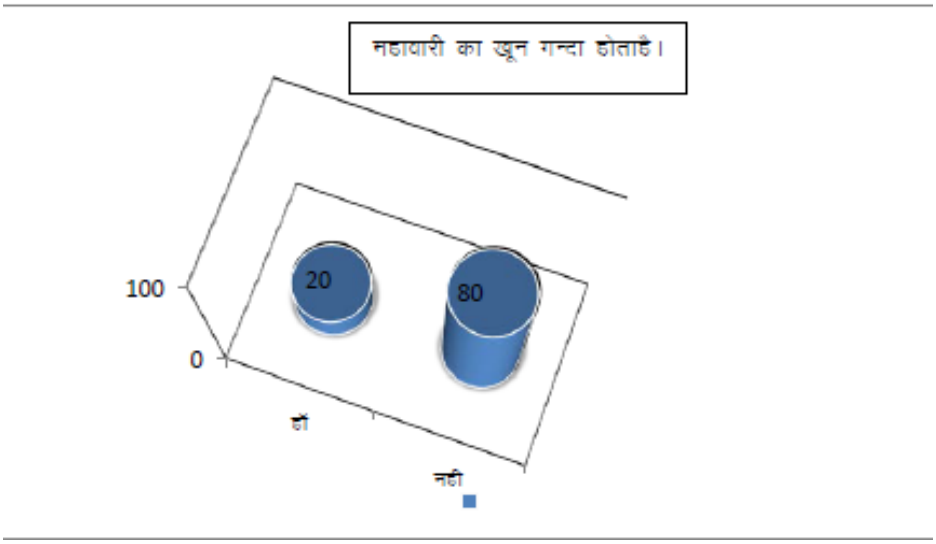

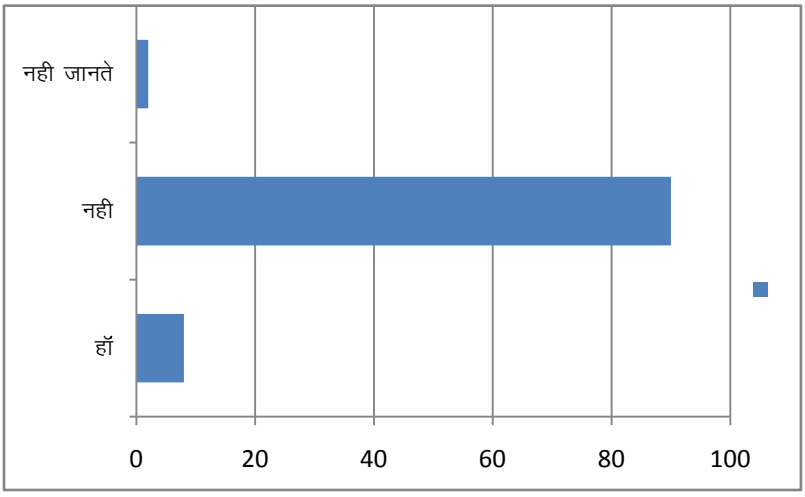
नही जानते
नही
हॉ
0
20
40
60
80
100

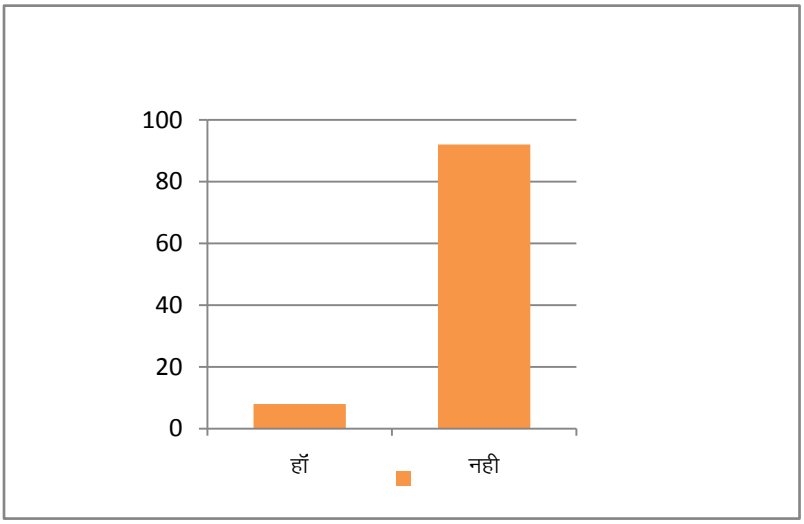
100
80
60
40
20
0
हॉ
नही

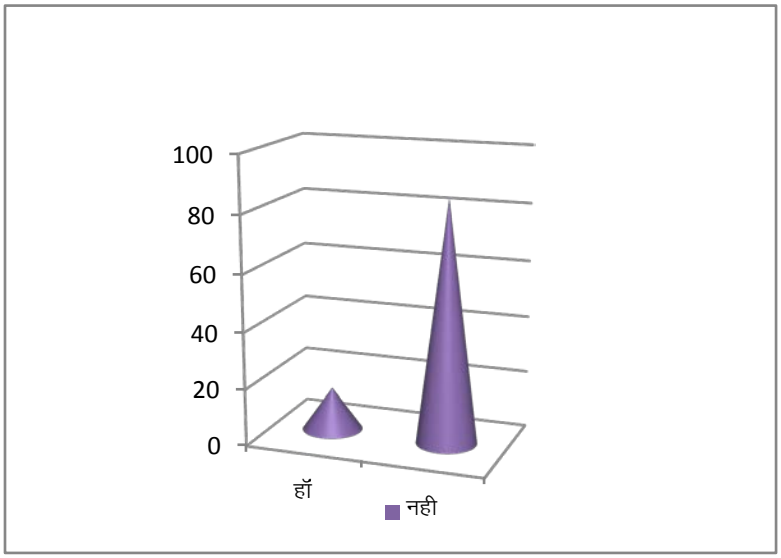
100
80
60
40
20
0
हॉ
नही

dk;l LFky ij ;ku mRihMu–जब प्रतिभागियो से पूछा गयाकि वे अपने स्कूल या कॉलेज में यौन उत्पीडन की घटना से कैसे निपटेंगे, तो अधिकांश ने कहा कि वे इसे रोकने की कोशिश करेंगें। उनमें से सभी यह स्पष्ट करने में सक्षम नही थे कि वे हिंसा को कैसे रोकेगें। केवल कुछ ही प्रतिभागी आंतरिक शिकायत समिति के बारे में जानते थे और कम ही समझा सकते थे, कि यह क्या है ।80 प्रतिशत से अधिक प्रतिभागियों ने इस प्रश्न को खाली छोड दिया ।ऐसा इसलिए हो सकता है क्योकि अर्ध कानूनी प्रकिया किसी के लिए(विशेष रूप से युवा लोगो को) भयभीत कर सकती है और इसके बारे में पर्याप्त बात नही की जाती हैं।

जिन कालेजो में हम गए थे , उनमें से अधिकांश में आई सी सी की स्थापना अभी तक नही हुई थी और अगर हुई भी थी ,तो शायद इसका बहुत अच्छी तरह से विज्ञापन नही किया गया था । नतीजतन , कई प्रतिभागियों को आईसीसी या तकनीकि विवरण याद नही रह सका कि ,वह क्या करता है । हालाकिं , जो उत्साहजनक था, वह यह था, कि अधिकांश प्रतिभागी हिंसा को रोकने के लिए तैयार थे की और उन्होने कहा कि वे इस घटना की जानकारी एक शिक्षक ,एक प्रिसिंपल को देंगें।

?kjyw fgalk&

हिंसा के आस पास दो सवाल थेः एक विकल्प के बारे में एक व्यक्ति के पास उपलब्ध घर में शारीरिक हिंसा का सामना करना और दूसरा अपनी बहन के प्रति प्रतिकिया के बारे में, जो वैवाहिक घर में हिंसा का सामना कर रही थी। इन दोनो सवालो का भी युवाओ ने बहुत ही सहजता से जवाब दिया, कई प्रतिभागियो ने उन्हे खाली छोड दिया, सबसे दिल छूने वाली बात यह है कि जवाब देने वाले सभी ने कहा कि वे किसी न किसी तरह से हस्तक्षेप करेंगें।

वैवाहिक परिवार में हिंसा के लिए आम प्रतिकियाओं में परामर्श और यहां तक कि पुलिस में मामला दर्ज करना भी शामिल था। यहां यह ध्यान रखना जरूरी है कि हस्तक्षेप केवल वैवाहिक परिवार की हिंसा के मामले में सुझाया गया था न कि जन्म सम्बन्धी परिवार में । जन्म सम्बन्धी परिवार में हिंसा को पुलिस हस्तक्षेप की आवश्यकता के रूप में नही देखा जाता है और यह संभवतः यह बताता है कि जन्म सम्बन्धी परिवार के भीतर महिलाओ के खिलाफ हिंसा वैवाहिक परिवारो की तुलना में बहुत कम दिखाई और संबोधित की जाती है। यह एक धारणा के कारण हो सकता है कि माता–पिता को अपने बच्चें को नियंत्रित करने का अधिकार है ,अच्छी तरह से व्यस्क होने के बाद ,एक धारणा है जिसे आज तक सभ्य समाज द्वारा पर्याप्त रूप से चुनौति नही दी गई है।

प्रारम्भिक विवाहः लगभग सभी लडकियो की विवाह की कानूनी उम्र के बारे में जागरूक थे लेकिन कुछ युवा लडकियो के समूह को छोडकर , विशेषकर जहां समूह नए थे । एक कॉलेज में थोडा भ्रम था जहां कुछ लडको ने सोचा था कि पुरूषों और महिलाओं दोनो के लिए शादी की कानूनी उम्र कमशः18 वर्ष थी ,जबकि कमशः 21 और 18 के विपरित था। प्रत्येक समूह में ,कम से कम 1–2 लडकियां थी जिन्होने दृढता से जोर दिया किसी को विवाह की कानूनी उम्र तय नही करना चाहिए और यह की उसे सही समय का इन्तजार करना

चाहिए जब वह शारीरिक रूप से तैयार हो। साथ ही एक युवा ने अपने अनुभव को साझा किया कि कैसे उसने वास्तव में एक स्थिति में हस्तक्षेप किया और पुलिस की मदद से एक शुरूआती शादी को रोक दिया।

रोजमर्रा के जीवन पर प्रभाव : यह अगला खण्ड गुणात्मक अध्ययन पर आधारित है क्योकि ये ऐसे युवाओ के समूह थे जो विरोधी ,उत्पीडन नारीवादी विचारो के साथ अधिक गहन सम्पर्क में थे ।प्रतिभागियों में से कई अपनी माताओ ,बहनो ,पडोसियो के साथ जुडकर नये नारीवादी भाईचारे , एकजुटता का निर्माण करते हुए बडे हुए थे। सबसे आम परिवर्तन आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति में वृद्वि था। 80 प्रतिशत से अधिक युवाओ ने बडे गर्व के साथ कहा की, कैसे उन्होने अपने आप में एक विकास देखा है, जिस तरह से वे बात करते थे , जिस तरह से वे खुद को ले जाते है, जिस तरह से वे बातचीत के दौरान ऑख से सम्पर्क करते है, और अन्य लिंग के साथ जुड सकते थे ।

एक विकलांग सदस्य ने साझा किया कि कैसे वह पिता पर बहुत निर्भर थे क्योकि उनका आत्मसम्मान कम था और हमेशा इस बात को लेकर चिन्तित रहते थे कि कैसे लोग बस मे उनका मजाक उडाते थे। अब उनकी भावना में बहुत सुधार हुआ है। वह गर्व महसूस करते है ,कि वह कौन है और उन्होने स्वचालित रूप से सार्वजनिक परिवहन और स्वतंत्र रूप से यात्रा करने के लिए अपने साहस को बढाया है। कई युवा लडकियों ने भी साझा किया कि उन्होने गतिशीलता में उल्लेखनीय वृद्वि का अनुभव किया। कई लडकियो को लगा कि वे अपने दम पर अकेले कही नही जा पायेंगी। उन्हे अपने माता पिता या भाई को उन्हे छोडने की आवश्यकता होगी क्योकि वे अपने दम पर शहर की सडको पर यात्रा करने से डरते थी। अब वे आत्मविश्वास से यात्रा करती है। अधिकांश प्रतिभागियो ने कहा की उनके पास कोई निर्णय लेने वाली शक्तियां नही है, जो ज्यादातर चीजो के सम्बन्ध में है, जो सीधे घर के भीतर उनकी चिन्ता नही करती है। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योकि वे परिवार में सबसे कम उम्र के सदस्यो मे से है।उनमें से कई कानूनी व्यस्क भी नही है और आर्थिक रूप से योगदान नही कर रहे है।

लेकिन यह स्पष्ट था कि पुरूष प्रतिभागियो को लडकियो की तुलना में घरेलू फैसले में ज्यादा सुना या शामिल किया जाता था। ज्यादातर लडकियो ने महसूस किया कि शिक्षा के माध्यम से उनकी शादी या शिक्षा के बारे में बातचीत करने की क्षमता बढ गयी है लेकिन अभी भी उन्हे एक लम्बा रास्ता तय करना है।''बहस और प्यार से बात रख सकते है,लेकिन अगर परिवार ज्यादा दबाव डालेगें , तो शायद मानना पडेगा''(हम बहस कर सकते है या उन्हे प्यार से मनाने की कोशिश कर सकते है कि हम शादी नही करना चाहते है या अधिक अध्ययन नही करना चाहते है, लेकिन इन मामलो में परिवार बहुत दबाव डालता है , तो मुझे सुनना पड सकता है)हिंसा के मुददो के बारे में कई को ऐसा लगता हैकि उन्होने हिंसा के खिलाफ आवाज उठाना और पहचानना सीख लिया। युवा पुरूष अब बहनो के लिए पैड खरीदने में सहज महसूस करते है। वे खुले तौर पर महावारी के दर्द, महावारी रक्त के बारे मे परिवार की महिला सदस्य से बात करते है, और अपने समुदाय ,में मासिक धर्म के

बारे में जागरूक करते है।कुल मिलाकर ,प्रतिभागियो ने सामाजिक रूढिवादिता के बारे में अधिक सहजता से वर्णन किया जो एक नारीवादी परिप्रेक्ष्य और सशक्तिकरण के सम्बन्ध में सटीक ज्ञान के साथ आता है।

ब) फोकस समूह चर्चाऍ–
इस खंड में,हम फोकस समूह चर्चा से निकले निष्कर्षो को देखते है,जो एक पारस्परिक बहस प्रारूप द्वारा सुगम था। कमरा दो हिस्सो में विभाजित था– हिंसक और अहिंसक ।समूह में लघु घटना का अध्ययन प्रस्तुत किये गये थे और समूह को यह तय करना था कि क्या घटना का अध्ययन हिंसक था या नही ।एक बार समूह के विभाजन के बाद, वे अपने सहपाठियो को तार्किक तर्क प्रस्तुत करके अपने पक्ष में आने के लिए मना सकते है । यदि प्रतिभागियो को अपने सहपाठियों पर विश्वास हो गया ,तो वे अपनी स्थिति बदलने के लिए स्वतंत्र थे।युवाओ को अतिरिक्त रूप से मामले के अध्ययन में हिंसा के प्रकार (मानसिक ,शारीरिक ,आर्थिक और यौन)और हिंसा के आधार (लिंग ,जाति ,वर्ग,धर्म,विकलांगता) के बारे में बात करने के लिए कहा गया।

पहले मामले कें अध्ययन में, जैनब ,एक तेज युवा लडकी ,एक वकील बनने की ख्वाहिश रखती है, जब तक की एक दिन उसके दादा उसे एक तरफ नही ले जाते है और उसे प्यार से एक शिक्षक बनने के लिए प्रोत्साहित करते है, यह बताते हुए कि अदालत में एक महिला के लिए कोई जगह नही है। वह उनकी अच्छी खासी सलाह सुनती है और एक अच्छी तरह से सम्मानित शिक्षक बन जाती है। जो बहुत सारे छात्रो की मदद करती है ।प्रतिभागियो को इस तथ्य पर स्पष्ट था कि यह हिंसा थी और यह लिंग आधारित हिंसा थी।''भेदभाव हिंसा का हिस्सा है,मानसिक हिंसा ''(भेदभाव भी हिंसा,मानसिक हिंसा का रूप है।) यह एक केस स्टडी थी ,जहां प्रतिभागियो ने हिंसा को कम नही किया लेकिन हिंसा को नाम दिया। जब इस पर विचार किया गया कि उन्होने इसे हिंसा क्यो माना , यह देखते हुए कि कोई शारीरिक हिंसा नही है और आखिरकार ''दादाजी भला ही तो चाहते थे ,वो प्यार से ही तो बात कर रहे थे''(दादाजी बहुत प्यार से ही तो बोल रहे थे और केवल सोच रहे थे।)प्रतिक्रिया त्वरित और तेज थी।''प्यार नियन्त्रित करने का तरीका है (प्यार भी नियन्त्रण का तरीका है)दादाजी शरीफ पोती की भलाई के लिए नही बल्कि अपनी इज्जत के लिए सोच रहे थे। (दादाजी पोती की भलाई के लिए नही लेकिन उसकी अपनी प्रतिष्ठा के बारे में सोच रहे थे)जो उसके परिवार की एक महिला के लिए पुरूष प्रधान कानूनी पेशे में शामिल होने पर धूमिल होने का जोखिम उठाती है।''प्यार से बात करो या सीधा डॉट लो,अगर आपको अपने सपने से दूर किया जा रहा है तो वह गलत है हिंसा है''(इससे कोई फर्क नही पडता कि इसे प्यार से कहा गया है या गुस्से के साथ ,अगर आप अपने सपने से अलग हो रहे है तो यह गलत है, यह हिंसा है।)उसका सपना टूट गया,प्यार से उसको अपना सपना जीने न दिया।वो सबसे बडी हार हैं यहां सबसे बडी बात यह है कि उसका सपना चकनाचूर हो गया था, प्यार से बिखर गया था। लेकिन सब एक साथ ही बिखर गया।उसे आगे सपने देखने से रोक दिया गया। शायद यह ही वह पहलू है जो प्रतिभागियो के साथ सबसे अधिक गूंजता है, जिनमें से कई युवा

महिलाऐ अपनी शिक्षा जारी रखने और अपने स्वयं के सपनों का पालन करने के लिए हर दिन भावनात्मक जोडतोड के खिलाफ संघर्ष कर रही थी।

दूसरे मामले के अध्यनय में, एक युवा महिला सडक पर चल रही है, जब एक आदमी उस पर सीटी बजाता है और उसके पीछे घूमते हुए हिन्दी गाने गाता है। इस मामले के अध्ययन ने प्रतिभागियो के बीच कुछ बहुत गर्म बहस को प्रेरित किया। जबकि अधिकांश लोग आश्वस्त थे कि यह यौन उत्पीडन का कार्य था, और इसलिए यह हिंसा का एक प्रकार है ,कई लोग जिन्होने कहा था कि लडके को अभिव्यक्ति का और सडक पर सीटी बजाने का अधिकार है ,जरूरी नही कि वह किसी पर सीटी बजा रहा हो। लडके को सडक पर घूमने और गाना गाने का पूरा अधिकार है। अगर वह लडकी के पीछे घूमता है तो यह उसकी गलती नही है।कुछ प्रतिभागी थे जिन्होनें महसूस किया कि लडकियां उत्पीडन की कहानियां बनाती है, लेकिन वास्तव में गुप्त रूप से ध्यान आर्कषित करती है। जब इन प्रतिभागियों (जो ज्यादातर युवा महिलाएं और एक युवक थे) से पूछा गया कि उन्होने अपने रोजमर्रा के जीवन में क्या अनुभव किया, यहां तक की सिर्फ कॉलेज से आने और जाने के दौरान, उन्होने धीरे धीरे स्वीकार किया कि, उन सभी को आवांछित ध्यान मिला है।

इस बिन्दु पर, अन्य प्रतिभागियो को यह इंगित करने के लिए, कि यह अलग है जब आप किसी ऐसे व्यक्ति से ध्यान आर्कषित करते हैं जैसे कि आप कुछ ''सडक का रोमियो'' से ध्यान आर्कषित करने का विरोध करते है। चर्चा के अंत की ओर लगभग सभी(1या 2 लोगो के अपवाद के साथ) आश्वस्त थे कि यह हिंसा का एक उदाहरण था।

तीसरे मामले के अध्ययन में, एक महिला को उसके पति द्वारा उसके खाने में बहुत अधिक नमक डालने के लिए एक बार थप्पड मारा जाता है। यह सभी प्रतिभागियो के लिए आसान था, लगभग सर्वसम्मति से यह कहते हुए कि यह हिंसा थी। भले ही यह एक थप्पड था । समूहो में अपवाद थे ,जो या तो बुरी तरह से शैतान के वकील की भूमिका निभा रहे थे या वास्तव में उनकी स्थिति पर विश्वास करते थे। किसी भी तरह से कुछ प्रतिभागी थे, जिन्होने जोर देकर कहा कि'' यदि कोई आदमी काम से थककर वापस आता है, तो यह सुनिश्चित करना पत्नी का कर्तव्य है कि उसके लिए स्वादिष्ट भोजन हो। आखिरकार वह प्रदाता है, परिवार का संरक्षक है।'' यह कम से कम वह कर सकती थी। इन तर्को को बाकी प्रतिभागियो ने दृढता से कहा ,'' किसी को भी कभी किसी को थप्पड नही मारना चाहिए।

हम केवल उन लोगो को मारते है जिन्हे हम अपने से हीन समझते है। इससे पता चलता है कि वह अपनी पत्नी को अपने बराबर नही मानता है। यह अपने आप में ही हिंसा का एक कार्य है।'' ''एक अन्य प्रतिभागी ने कहा ,''भले ही पत्नी ने ऐसा कुछ किया हो ,जो उसे पसन्द नही था, वह इसके बारे में बात कर सकता था।'' अगर वह गुस्सा दिखाना चाहता था , तो वह चिल्ला सकता था, थप्पड मारना गलत है। फिर भी एक और ने कहा, किसी भी तरह की शारीरिक हिंसा, हिंसा ही है। यहां तक की एक भी थप्पड हिंसा है। पति को अपनी पत्नी पर प्रहार करने का कोई अधिकार नही है।

चौथे मामले के अध्ययन में, आमिर और सलमा सहपाठी है जो प्यार में पड जाते है। वे अपने माता पिता को बताने के लिए कॉलेज खत्म होने तक का इन्तजार करते है कि वे शादी करना चाहते है। लेकिन उनके माता पिता उनकी जोडी से नाखुश है। सभी प्रतिभागियो ने अन्जाने में यह निर्णय लिया कि यह हिंसा का मामला था। हालाकि इस बात पर कुछ मतभेद था, कि हिंसा कौन कर रहा है। जबकि अधिकांश प्रतिभागियो का मानना था ,कि माता पिता दंपति के खिलाफ भावनात्मक रूप से हिंसक हो रहे थे और अपना जीवन साथी चुनने के उनके अधिकार का उल्लंघन कर रहे थे–'' मम्मी पापा को ऐसा नही करना चाहिए''(माता पिता को ऐसा नही करना चाहिए)– वो लोग क्या गलत किये है, प्यार ही तो किया है(उन्होने क्या गलती की है!प्रेम) भागकर शादी भी नही किये, मॉ बाप के आशिर्वाद के साथ करना चाह रहे थे ,क्या गलत किया मॉ बाप को समझना चाहिए''(कम से कम वे भागे नही थे और वे वास्तव में आशीर्वाद के लिए माता पिता के पास आये। माता पिता को अधिक समझ होनी चाहिए)

एक युगल प्रतिभागी थे जिन्होने कहां कि आमिर और सलमा को अपने माता पिता की इच्छा के खिलाफ नही जाना चाहिए ।आखिरकार उन्होने पाल पोस कर बडा किया है उनको इस तरह से कैसे चोट पहुंचा सकते है ,आमिर और सलमा को ऐसे नही करना चाहिए ''(माता पिता हमें बहुत कुछ देते है,बच्चे उनको कैसे तकलीफ दे सकते है, आमिर और सलमा को ऐसा नही करना चाहिएं).इन तर्को का खंडन अनेक प्रतिभागियो ने भावुक रूप से किया , जिन्होने कहां,'' पाल पोस कर बडा किया,इसका मतलब यह नही कि हम अपनी खुद की पसन्द नही कर सकते है।''(बस इसलिए कि उन्होने हमे बडा किया है, इसका मतलब यह नही कि हमारी अपनी कोई पसन्द नही)।

lhek,oa&

यह कहना सम्भव नही है कि इनमें से कितने युवा वास्तव में उनके उत्तरों पर विश्वास करते है और उनमें से कितने केवल राजनीतिक रूप से सही उत्तर दे रहे थे या उत्तर जो लगा कि मूल्याकंनकर्ता/सुविधाकर्ता सुनना चाहते उस रूप में दे रहे ।

fu"d"kZ ,oa lq>ko&

भारत में समाज सुधार के गौरवशाली इतिहास के बावजूद आज भी सच्चाई यही है कि हमारा समाज पुरातन स्त्री विरोधी रूढिवादी विचारों से मुक्त नही हुआ है लेकिनप्रस्तुत विषय पर अध्ययन के आधार प्राप्त आकडों से यह ज्ञात होता है कि हमारी युवा पीढी समाज में व्याप्त रूढिवादिता के प्रति सजग है तथा स्वयं के साथ साथ वह समाज को भी जागरूक कर रहे है।

lUnHkZ lwph

- अल्टेकर,ए0 एस0 ,1995.'' द पोजिशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन'' मोतीलाल बनारसीदास,नई दिल्ली
- गेटस, मेलिण्डा, 2019. ''द मोमेण्ट ऑफ लिफ्ट'', ब्लू बर्ड पब्लिशर्स
- बासु , श्रीमती,2015. ''ट्रबल विद द मैरिज'', यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस

- मिल, जॉन स्टूअर्ट ,1869.'' द सबजेक्शन ऑफ वूमेन'',पेनग्विन बुक
- मेनन, निवेदिता, 2001. '' जेण्डर एण्ड पालिटिक्स इन इण्डियाा '' ओ यू पी इण्डिया
- मेनन निवेदिता, 2012.'' सिइंग लाइक अ फेमिनिस्ट'', पेग्विन इण्डिया
- मजूमदार , माया,2004, सोशल स्टेटस ऑफ वूमेन इन इण्डिया'',डॉमिनेन्ट पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
- रॉव, डा0 दिगमुर्थी भास्करा एण्ड लथा, मिसेज दिगमुर्थी पुष्पा,1999. '' वूमॅन , चैलेन्ज एण्ड एडवान्समेन्ट, डिसकवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
- रेगे,संगीता, देवोस्थली पदमा भाटे व प्रकाश ,पदमा,2013.''फेमिनिस्ट काउन्सलिंग एण्ड डोमेसटिक वायलेन्स इन इण्डिया'' राउटलेज इण्डिया
- लिण्डमैन, बजार्न लॉरसन, 2019. '' वूमन्स इमपावरमेण्ट , अ मेन्स पर्सपेक्टिव'', बुक ऑन डिमाण्ड पब्लिशर्स